# कथा सरिता

## नकल के साथ अक्ल

एक पहाड़ की ऊंची चोटी पर एक बाज रहता था। पहाड़ की तराई में बरगद के पेड़ पर, एक कौआ अपना घोंसला बनाकर रहता था। वह बड़ा चालाक और धूर्त था। उसकी कोशिश सदा यही रहती थी कि बिना मेहनत किए खाने को मिल जाए। पेड़ के आस-पास खोह में खरगोश रहते थे। जब भी खरगोश बाहर आते तो बाज ऊंची उड़ान भरते और एकाध खरगोश को उठाकर ले जाते।

एक दिन कौए ने सोचा, "वैसे तो ये चालाक खरगोश मेरे हाथ आएंगे नहीं, अगर इनका नर्म मांस खाना है तो मुझे भी बाज की तरह करना होगा।" एकाएक झपट्टा मारकर पकड़ लूंगा। दूसरे दिन कौए ने भी एक खरगोश को दबोचने की बात सोचकर ऊंची उड़ान भरी। फिर उसने खरगोश को पकड़ने के लिए बाज की तरह जोर से झपट्टा मारा। अब भला कौआ बाज का क्या मुकाबला करता।

खरगोश ने उसे देख लिया और झट वहाँ से भागकर चट्टान के पीछे छिप गया। कौआ अपनी ही झोंक में उस चट्टान से जा टकराया। नतीजा, उसकी चोंच और गर्दन टूट गई और उसने वहीं तड़प कर दम तोड़ दिया।

**शिक्षा : नकल करने के लिए भी अकल चाहिए।**

## खुद की भेंट चढ़ाओ

अगर भगवान के लिए कुछ करना चाहते हो तो खुद की भेंट चढ़ाओ। बहुत पुरानी बात है, कहीं पर यज्ञ हो रहा था और उस क्षेत्र का राजा एक बकरे की बलि चढ़ाने जा रहा था।

तभी उधर से बुद्ध जी गुज़र रहे थे। उन्होंने उस राजा को कहा, ठहरो, राजन!

ये क्या कर रहे हो? आखिर किसलिए?

राजा ने कहा, इसके चढ़ाने से बहुत पुण्य प्राप्त होगा।

बुद्ध बोले, यदि ऐसी बात है तो मुझे भेंट चढ़ा दो, इससे भी ज़्यादा पुण्य मिलेगा। यह सुनकर राजा थोड़ा डरा, क्योंकि बकरे की बली चढ़ाने में कोई हर्ज़ा नहीं था, लेकिन बुद्ध की बली चढ़ाने की बात मन में आते ही राजा कांप गए।

बुद्ध ने कहा, अगर सच में ही कोई बहुत बड़ा लाभ करना हो तो अपने को ही चढ़ा दो, बकरा चढ़ाने से क्या होगा?

राजा ने कहा, अरे, नहीं महाराज! बकरे का क्या नुकसान होगा, बल्कि यह तो स्वर्ग चला जायेगा।

बुद्ध बोले, यह तो बहुत अच्छा है, मैं स्वर्ग की तलाश कर रहा हूँ, तुम मुझे बली चढ़ा दो और मुझे स्वर्ग भेज दो और ऐसा क्यों नहीं करते कि तुम अपने माता-पिता को ही स्वर्ग भेज दो या फिर खुद को क्यों रोके हुए हो? जब स्वर्ग जाने की ऐसी सरल व सुगम तरकीब मिल गई है, तो काट लो गर्दन अपनी। इस बेचारे बेज़ुबान बकरे को क्यों भेज रहे हो स्वर्ग में? बकरे को खुद ही चुनने दो कि उसे कहाँ जाना है। उस राजा को बुद्ध की बात समझ में आ गयी।

सच तो यही है अगर भगवान के लिए कुछ करना ही चाहते हो तो खुद को ही भेंट चढ़ाओ। खुद को, अपने मन को, अपने तन को और फिर सामर्थ्य अनुसार अपने धन को भेंट चढ़ाओ। यही जीवन का सत्य है।

## सत्संग महिमा

एक संत के पास बहरा आदमी सत्संग सुनने आता था। उसके कान तो थे पर वे नाड़ियों से जुड़े नहीं थे, एकदम बहरा, एक शब्द भी नहीं सुन सकता था। किसी ने संत से कहा, "बाबा जी, वह जो वृद्ध बैठे हैं, वह कथा सुनते-सुनते हंसते तो हैं पर हैं बहरे।" बाबा जी सोचने लगे, "बहरा होगा तो कथा सुनता नहीं होगा और कथा नहीं सुनता होगा तो रस नहीं आता होगा। रस नहीं आता होगा तो यहाँ बैठना भी नहीं चाहिए, उठकर चले जाना चाहिए, यह जाता भी नहीं है।"

बाबा जी ने उस वृद्ध को अपने पास बुला लिया। सेवक से कागज़ कलम मंगवाया और लिख कर पूछा, "तुम सत्संग में क्यों आते हो?" उस वृद्ध ने लिखकर जवाब दिया, "बाबा जी, मैं सुन तो नहीं सकता हूँ लेकिन यह तो समझता हूँ कि ईश्वर प्राप्त महापुरुष जब बोलते हैं, तो पहले परमात्मा में डुबकी मारते हैं। संसारी आदमी बोलता है तो उसकी वाणी, मन व बुद्धि को छूकर आती है। लेकिन ब्रह्मज्ञानी संत जब बोलते हैं तो उनकी वाणी आत्मा को छूकर आती है।

मैं आपकी अमृतवाणी तो नहीं सुन पाता हूँ, पर वो उसके आंदोलन मेरे शरीर को स्पर्श करते हैं। दूसरी बात आपकी अमृतवाणी सुनने के लिए जो पुण्यात्मायें आती हैं, उनके बीच बैठने का पुण्य भी मुझे प्राप्त होता है। बाबा जी ने देखा कि ये तो ऊंची समझ के धनी हैं।

उन्होंने कहा, मैं यह जानना चाहता हूँ कि आप रोज़ सत्संग में समय पर पहुंच जाते हैं और आगे बैठते हैं, ऐसा क्यों?

उस वृद्ध ने लिखकर जवाब दिया, मैं परिवार में सबसे बड़ा हूँ, बड़े जैसा करते हैं, वैसा ही छोटे भी करते हैं। मैं सत्संग में आने लगा तो मेरा बड़ा लड़का भी इधर आने लगा। शुरूआत में कभी-कभी मैं बहाना बनाकर उसे ले आता था।

मैं उसे ले आया तो वह अपनी पत्नी को यहां ले आया, पत्नी बच्चों को ले आई, अब सारा कुटुम्ब सत्संग में आने लगा, कुटुम्ब को संस्कार मिल गए।

आत्म ज्ञान का सत्संग ऐसा है कि यह समझ में नहीं आए तो क्या, सुनाई नहीं देता हो तो भी इसमें शामिल होने मात्र से कुछ पुण्य तो होता है और पूरे परिवार का कल्याण होने लगता है। फिर जो व्यक्ति श्रद्धा एवं एकाग्रतापूर्वक सुनकर इसका मनन करे उसके परम कल्याण में संशय ही क्या...!

पटना-बिहार। उप मुख्यमंत्री सुशील मोदी को रक्षासूत्र बांधते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. संगीता। साथ हैं ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. रमेन्द्र तथा अन्य।

नेपाल-पोखरा। गण्डक प्रदेश उप सभायुक्त सृजना शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. परणीता।

जयपुर-राजापार्क। महिला मोर्चा अध्यक्षा सोनम सिंह को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. पूनम,सबज़ोन इंचार्ज,राजापार्क तथा अन्य।

सीतापुर-उ.प्र.। जेल अधीक्षक को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. योगेश्वरी।

माउण्ट आबू-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के आध्यात्मिक संग्रहालय में भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष ईश्वरचंद डागा, पालिका उपाध्यक्षा अर्चना दवे, मंडल महामंत्री टेकचंद भंभाणी, मांगीलाल काबरा आदि को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् आध्यात्मिक चर्चा करते हुए म्युज़ियम संचालिका ब्र.कु. प्रतिभा।

अयोध्या-उ.प्र.। जगद्गुरू रामदिनेशाचार्य जी महाराज को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता। साथ हैं ब्र.कु. मुकेश तथा ब्र.कु. शांति।

शमसाबाद-आगरा(उ.प्र.)। सी.ओ. प्रभात कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी।

नैनीताल-उत्तराखण्ड। डी.आई.जी. जगत राम जोशी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. वीणा।

सासाराम-विहार। डी.एफ.ओ. प्रद्युमन गौरव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बबिता।

कोटद्वार-उत्तराखण्ड। सैनिकों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् सूबेदार मेजर यशवंत सिंह रावत को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति।

वीबीगंज-फर्रुखाबाद। रक्षाबंधन कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. सुरेश गोयल, ब्र.कु. मंजू, पुलिस अधीक्षक डॉ. अनिल कुमार मिश्र, भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मिथलेश अग्रवाल, उ.प्र. व्यापार मंडल उपाध्यक्ष अरुण प्रकाश तिवारी, पूर्व प्राचार्य आर.सी. सक्सेना तथा अन्य।